कथ्थक नृत्य

(नियम : प्रारंभिक से ही तबला और लहरा के साथ नृत्य करना होगा ।)

प्रारंभिक
कथ्थक नृत्य

पूर्णांक 50, न्यूनतम 18

क्रियात्मक : 40, शास्त्र 10 (मौखिक)

शास्त्र :

१. तीनताल का परिचय ।
२. कथ्थक नृत्य का परिचय (पाँच वाक्यों में)।
३. खुद का, संस्थाका और गुरु का परिचय (पाँच वाक्यों में) ।
४. परिभाषाएँ : लय, विलंबित लय, मध्यलय, द्रुतलय, मात्रा, सम, ताली, खाली, विभाग और तिहाई

क्रियात्मक :

१. तीनताल का परिचय ।
२. तीनताल में तत्कार बराबर, दुगुन, चौगुन तिहाई सहित ।
३. तीनताल में 6 सादे तोड़े, 2 चक्करदार तोड़े, 2 तिहाई ।
४. तीनताल के ठेके की ताल लगाना ।
५. तीनताल के गिनती से ठाह, दुगुन, चौगुन हाथ से ताल लगाना ।
६. सभी रचनाओं की पढन्त आवश्यक ।

अंकपत्रिका : कुल मौखिक - ५०. समय : १० मिनट प्रतिछात्र

तोडा	ततकार	तालकी जानकारी	पढन्त	परफेक्शन	सामान्यज्ञान	कुल अंक
10	10	5	5	10	10	50

प्रवेशिका प्रथम
कथ्थक नृत्य

पूर्णांक : 75, न्यूनतम : 26
क्रियात्मक : 60 शास्त्र (मौखीक): 15
• प्रारंभिक के सभी पाठ्यक्रम को दोहराना ।

शास्त्र :

१. लय (बराबर, दुगुन, चौगुन) सम, मात्रा, ताली, खाली, गतनिकास, तत्कार, तोडा, गतपल्टा, तथा बाँट इन शब्दों की परिभाषा व्यक्त करना ।
२. ताल - लिपि के चिन्हों को पहचानना ।
३. दादरा तथा केहरवा की जानकारी ।
४. पाँच वर्तमान कथक गुरुओं के नाम ।
५. अभिनय दर्पण के अनुसार निम्नलिखित असंयुक्त हस्तमुद्राएँ तथा उनका प्रयोग :-

1) पताका	6) अर्धचंद्र
2) त्रिपताका	7) अराल
3) अर्धपताका	8) शुकतुण्ड
4) कर्तरिमुख	9) मुष्टि
5) मयूर	10) शिखर

क्रियात्मक :

• **तीनताल** :

रंगमंच प्रणाम	1
ठाठ	2
सादा आमद	1
तोड़े	6
चक्करदार तोड़े	2
परन	2

• **गतनिकास** :
१. सीधी गत, मटकी गत, बाँसुरी गत ।
२. तत्कार की बराबर, दुगुन, चौगुन तिहाई सहित ।
३. हाथ से ताल लगाते हुऐ सभी तोड़ों का अभ्यास ।
४. तीन ताल के ठेके को ताल सहित ठाह, दुगुन, चौगुन में पढ़ना ।
५. तीन ताल में 4 तत्कार के बाँट ।

• केहरवा या दादरा तालमें एक अभिनय गीत जिसके बोल मुखाग्र हो ।

प्रवे. प्रथम कुल मौखिक ७५ समय : १५ मिनट प्रतिछात्र

ठाठ	तोड़े	ततकार	गतनिकास	पढन्त	अभिनय	गीत
5	10	10	10	5		5

कुल

अंक 75

मुद्रा	प्रदर्शन	प्रभाव	शास्त्र	मौखिक
5	5	5		15

प्रवेशिका पूर्ण
कथ्थक नृत्य

पूर्णांक : 125 न्यूनतम : 44
शास्त्र : 50 न्यूनतम : 18
क्रियात्मक : 75 न्यूनतम : 26

शास्त्र :-

१. कथ्थक नृत्य का संक्षिप्त इतिहास (10 से 15 वाक्यों में)
२. आमद, तोड़ा टुकड़ा, तत्कार, परन, चारदार, कवित, तिहाई, अंग प्रत्यंग, उपांग, गतभाव, हस्त मुद्रा आदि की परिभाषा उदाहरण सहित ।
३. अ) लोकनृत्यकी परिभाषा तथा पाँच प्रादेशिक लोकनृत्यों के नाम जानना ।
   ब) सात शास्त्रीय नृत्यशैलियों के नाम उनके प्रांत सहित ।
४. असंयुक्त हस्तमुद्राएँ :- प्रयोग :- (अभिनय दर्पण से)

11) कपित्थ	12) कटकामुख
13) सूचि	14) चंद्रकला
15) पद्मकोष	16) सर्पशीर्ष
17) मृगशीर्ष	18) सिंहमुख
19) कांगुल	20) अलपद्म
21) चतुर	22) भ्रमर
23) हंसास्य	24) हंसपक्ष
25) संदेश	26) मुकुल
27) ताम्रचूड	28) त्रिशूल

५. किसी प्रसिध्द कथ्थक कलाकार की जीवनी । (10 वाक्यों में)
६. वर्तमान पाँच तबला वादकों के नाम, जो कथ्थक नृत्यकी संगत करते हों ।
७. क) **लिपिबध्द** : तीन ताल में एक तिहाई, एक साधारण आमद (ताथईततथई) एक परन जुड़ी आमद, एक तोडा, एक परन, एक कवित्त ।
   ख) झपताल में ठेके की ठाह (बराबर), दुगुन, एक तिहाई, एक तोडा, एक सादा आमद, एक परन ।
   ग) दादरा तथा कहरवा ताल के ठेके को ताल चिन्ह सहित लिखना ।

क्रियात्मक :

- **तीनताल :**

2 ठाठ	1 परन जुड़ी आमद
1 रंगमंच प्रणाम	4 तोडे (कमसे कम 3 आवृत्ति)

2 परन 2 चक्करदार परन
1 कवित्त 1 चक्करदार तिहाई ।

त्रिताल में आधी, बराबर, दुगुन, चौगुन अठगुन तिहाई सहित
त्रिताल में बाँट तिहाई सहित
गतनिकास - मोरमुकुट, घुँगट, बाँसुरी
गतभाव - राधा का पानी भरने जाना, कृष्ण का कंकर से मटकी फोड़ना, राधा का रुष्ट होना, कृष्ण का हंसना आदि.
गतभावमें दिखाई गयी हस्तमुद्राओं के नाम

- **झपताल:**

1 ठाठ 1 आमद
1 तिहाई 1 तोडे
1 चक्करदार तोडा 1 परन
तत्कार बराबर दुगन तिहाई सहित ।
सभी बोलोंको हाथ से ताली देकर पढ़ना आवश्यक है।

प्रवे. पूर्ण कुल मौखिक - 75, समय : 20 मिनट प्रतिछात्र

ठाठ	तोड़े	कवित्त	ततकार	गतनिकास	गलभाव
5	10	5	5	10	10

पढन्त	झपताल मे नृत्त	प्रदर्शन	मुद्रा
10	10	5	5

कुल अंक 75

मध्यमा प्रथम वर्ष
कथ्थक नृत्य

पूर्णांक : 200, न्यूनतम : 70,
शास्त्र : 75, न्यूनतम : 26
क्रियात्मक : 125 न्यूनतम : 44.

शास्त्र :

१. प्रारंभिक से प्रवेशिका तक के सभी शब्दों की जानकारी ।
२. नर्तन के भेद नृत्त, नाट्य, नृत्य की परिभाषा । -
३. लास्य तथा ताण्डव की केवल परिभाषा ।
४. अभिनय दर्पणानुसार ग्रीवा भेद । (4 प्रकार)
५. अभिनय दर्पणानुसार प्रकार के शिरोभेद ।
६. लोक-नृत्य तथा आधुनिक नृत्य की परिभाषा ।
७. जीवनियाँ- पं. कालिका प्रसाद, पं. बिंदादीन महाराज, पं.हरिहर प्रसाद, पं.हनुमान प्रसाद ।
८. 8) जयपुर तथा लखनऊ घराने की विशेषता ।
९. 9) संयुक्त हस्तमुद्राएँ (अभिनयदर्पणानुसार) परिभाषा और प्रयोग

(1) अंजलि,	(2) कपोत	(3) कर्कट
(4) स्वस्तिक	(5) डोला,	(6) पुष्टपुट
(7) उत्संग	(8) शिवलिंग	(9) कटकावर्धन
(10) कर्तरी स्वस्तिक	(11) शकट	(12) शंख

१०. तीनताल, झपताल, एकताल के पाठ्यक्रम की रचनाओं को लिपिबद्ध करना।
११. गतभाव के प्रसंगों का वर्णन लिखना ।
१२. संत कवि सूरदास तथा मीरा का परिचय ।

क्रियात्मक :

• तीन ताल में विशेष योग्यता :

- गुरुवन्दना
- तीन ठाठ (तीन अलग Poses)
- दो आमद (1 साधा +1 परणजुड़ी)
- तीन चक्करदार तोड़े जो 4 आवृत्ति से कम न हो
- तीन परन (1. तिश्र जाति परण आवश्यक)
- तीन चक्करदार परन
- दो कवित्त
- तीन गिनती की तिहाई
- तत्कार मे आधी, बराबर, दुगुन, तिगुन, चौगुन, आठगुन करना तथा बॉट या चलन का विस्तार करना ।

❖ झपताल :

- दो ठाठ .
- एक परन जुड़ी आमद

- एक सलामी
- दो चक्करदार तोडे
- दो चक्करदार परन
- तीन तिहाई
- तीन सादे तोड़े (तीन आवृत्ति से अधिक आवर्तनोंके हो)
- दो परन
- एक कवित्त
- तत्कार की बराबर, दुगुन, चौगुन तिहाई सहित

❖ एकताल :

- एक ठाठ
- दो तोड़े
- एक परन
- एक आमद
- एक चक्करदार तोड़ा
- एक चक्करदार परन
- एक तिहाई
- ततुकार की बराबर, दुगुन, चौगुन तिहाई सहित ।

❖ तीन ताल में :

- गतनिकास की विशेषता झूमर, (झूमर घुंगरु युक्त माथे का बिंदी जैसा मांग का गहना) कलाई।
- मटकी उठाने के तीन प्रकार
- गतभाव : माखनचोरी .
- अभिनय पक्षमें - एक भजन अथवा भक्तिरस के आधारपर - गीत या पद पर अभिनय (भावप्रस्तुति)

मध्यमा प्रथम वर्ष : कुल मौखिक 125, समय : 35 मिनिट प्रतिछात्र

वंदना	ठाठ	चक्र तोडा	परन	चक्र परन	कवित्त
5	5	5	5	5	5
तिहाई	तत्कार	गतविकास	गतभाव	पदन्त	झपताल में नृत्त
5	10	10	10	10	10
एकताल में नृत्त	भजन/भक्तिगीत	मुद्रा	प्रभाव		
10	10	5	15		

कुल अंक 125

मध्यमा : द्वितीय वर्ष
कथ्थक नृत्य

पूर्णांक 250, न्यूनतम : 88
शास्त्र 100, न्यूनतम : 35
क्रियात्मक 150, न्यूनतम : 53

शास्त्र :

१. कथ्थक नृत्य की मंदिर परंपरा और दरबार परंपरा का संपूर्ण ज्ञान ।
  अ. बनारस घराने की विशेषताएँ।
  आ. जयपुर, लखनौ घराने की संपूर्ण परंपरा का ज्ञान (वंश परंपरासहित)।
२. भौ संचालन तथा दृष्टि भेद के प्रकार और उनका प्रयोग (अभिनव दर्पणानुसार) ।
३. लास्य तथा ताण्डव की व्याख्या तथा उनके प्रकार ।
४. तीनताल के ठेके को आधी 1/2 पौनी ¾, कुआड़ी 1-1/4, आडी 1-1/2 (डेढ़ी) , बिआड़ी 1-3/2 (पौने दो) लय में लिपिबध्द करना ।
  1. अभिनय की स्पष्ट परिभाषा ।
  2. आंगिक अभिनय, वाचिक अभिनय, आहार्य – अभिनय, सात्त्विक अभिनय की व्याख्या तथा प्रयोग ।
  b. संयुक्त हस्त की निम्नलिखित मुद्राओं की परिभाषा तथा प्रयोग:
२. चक्र, सम्पुट, पाश, कीलक, मत्स्य, कूर्म, वराह, गरुड, नागबन्ध, खटवा, भेन्ड ।
३. (8) जीवनियाँ– पं. अच्छन महाराज, पं. शंभू महाराज, पं. लच्छुमहाराज,
  i. पं. नारायण प्रसाद, पं. जयलाल ।
  b. तीनताल, रुपक तथा एकताल के सभी बोलों की लिपिबध्द क्रिया।
  c. कथक नृत्य के अध्ययन की शारीरिक, मानसिक और बौध्दिक उपयोगिता।

क्रियात्मक :
श्री शिव वंदना अथवा श्रीकृष्ण वंदना

१. तीन तालमें विशेषताओं सहित:

एक उठान, एक ठाठ, एक आमद, एक परमेलू, एक नटवरी तोड़ा, एक फर्माइशी चक्रदार (पहली धा पहले, दूसरी था दूसरे तथा तीसरी धा तीसरी समपर) एक गणेश परन, एक तत्कार की लड़ी। (तकिट किट धिन)

२. रुपक:

एक ठाठ	एक सादा आमद
चार सादे तोड़े	दो चक्रदार तोड़े
दो परन	दो चक्रदार परन
दो तिहाई	एक कवित्त

तत्कार– बराबर, दुगुन, चौगुन तिहाई सहित

३. एकताल:

दो ठाठ	एक परन जुडी आमद
चार तोड़े	दो चक्करदार तोडे
दो परन	दो चक्रदार परन

एक कवित्त तीन तिहाई
तत्कार– बराबर, दुगुन, तिगुन, चौगुन तिहाई सहित ।

४. सीखे हुए सभी बोलों की ताल देकर पढ़न्त करना।
५. गतनिकास में विशेषता : रुखसार, छेड़छाड़, आँचल आदि।
६. गतभाव में कालिया दमन ।
७. 'होरी' पद पर भाव प्रस्तुति ।

मध्यमा द्वितीय वर्ष (पूर्ण) : कुल मौखिक – १५० समय : ४० मिनट प्रतिछात्र

वंदना	ठाठ	आमद	नटवरी तोडा	परन	परमेलू
५	५	५	५	५	५

फरमाईशी चक्रदार	गणेश परन	ततकार लडी/बाँट	गतभाव	गतनिकास
५	५	२०	१०	१०

रूपक में नृत्य	एकताल में नृत्त	पढन्त	होरीभाव नृत्त	प्रदर्शन
१५	१५	१५	१०	१५

अंक 150

विशारद प्रथम वर्ष
कथ्थक नृत्य

पूर्णांक : 400 न्यूनतम:180
शास्त्र :150 न्यूनतम : 52
क्रियात्मक: 250 (किया 200 मंच प्रदर्शन 50)
न्यूनतम :128

शास्त्र :

प्रथम प्रश्न पत्र

अंक: 75, न्यूनतम 26

१. नाट्य की उत्पत्ति (भरतानुसार) नाट्य का प्रयोग तथा नाट्य का प्रयोजन।
२. नवस्सों की परिभाषा ।
३. नायक के चार भेद: धीरोद्धत, धीरललित, धीरोदात्त, धीरप्रशांत ।
४. चार प्रकार की नायिका और उनकी परिभाषा अभिसारिका, खण्डिता, विप्रलब्धा तथा प्रोषितपतिका
५. दशावतार में से मत्स्य, वराह, कूर्म तथा नरसिंह अवतार की कथा तथा उनकी मुद्राएँ ।
६. ताल के दस प्राणों की व्याख्या ।
७. भरतनाट्यम्, मणिपूरी तथा कथकली नृत्य की जानकारी। इनकी वेशभूषा तथा वाद्यों का ज्ञान ।
८. तीनताल, झपताल, धमार में आमद बेदम तिहाई, फरमाईशी परन तथा चक्करदार परन, तिपल्ली तथा कवित्त को लिपिबद्ध करना ।
९. अ) गुरु शिष्य परंपरा का महत्त्व ।
२. ब) शिष्य के गुण तथा गुरु के प्रति उसका कर्त्तव्य ।

द्वितीय प्रश्न पत्र

अंक: 75, न्यूनतम 26

१. रस की निष्पत्ति, स्थाई भाव, भाव, विभाव, अनुभाव, व्यभिचारी भाव आदि की परिभाषा ।
२. निम्नलिखित पारिभाषिक शब्दों का ज्ञान
   तिपिली, कवित्त, फरमाईशी परन, कमाली परन, बेदम तिहाई, गॉट, अनुलोम, प्रतिलोम, भ्रमरी, न्यास विन्यास ।
३. कथक नृत्य में प्रयुक्त होने वाले निम्नलिखित गीत प्रकारों की व्याख्या: अष्टपदी, धृपद, ठुमरी, चतुरंग, त्रिवट, तराना, चैती, कजरी, होरी।
४. कथक नृत्य में नवाब वाजिद अली शाह तथा रायगढ़ के महाराज चक्रधर सिंह का योगदान ।

५. रास ताल (13), धमार (14), गजझंपा, (15), पंचम सवारी (15) में आमद, तिहाई, तोडा, चक्करदार परन तथा कवित्त आदि को लिपिबध्द करना।
६. जीवनियाँ : नटराज गोपीकृष्ण, कथ्थक सम्राज्ञी सितारा देवी, पंडित दुर्गालाल व गुरु कुन्दनलाल गंगानी ।
७. निबन्ध ज्ञान :
   i. रास तथा कथ्थक
   ii. ठुमरी का कथ्थक नृत्य से सम्बन्ध
८. नर्तक / नर्तकी के गुण और दोष ।

क्रियात्मक :

१. सरस्वती वंदना
२. तीनताल के अतिरिक्त झपताल में विशेष तैय्यारी ।
३. गजझंपा या छोटी सवारी (पंचम सवारी) तथा रास और धमार में ठेके की ठाह, दुगुन, ठाठ, आमद, दो तोड़े, एक परन तथा एक कवित्त का प्रदर्शन |
४. गतनिकास : आँचल, नाव, घूँघट के प्रकार ।
   गतभाव: पिछले वर्षों के सभी गतभावों का प्रदर्शन तथा द्रौपदी चीर हरण।
५. ठुमरी भाव (शब्द, राग, ताल की जानकारी आवश्यक)
६. एक तराना या त्रिवट किसी ताल में ।
७. हाथ से ताली लगाकर सभी बोलों की पढन्त
८. अभिसारिका, खण्डिता, विप्रलब्धा तथा प्रोषितपतिका नायिका पर गतभाव या इन से संबंधित पद या ठुमरी पर भाव नृत्य ।
९. तीनताल या झपताल की तत्कार में लड़ी या चलन ।
१०. अभिनय दर्पण का श्लोक"आंगिक भुवनं यस्य..."
११. पिछले संत कवियों को छोड़कर अन्य किन्हीं दो संत कवियोंके कवित या भजन पर भाव दिखाना तथा दोनों संत कवियों का परिचय देना।

- **मंच प्रदर्शन** : स्वतंत्ररूप में विधिवत मंचप्रदर्शन अनिवार्य (20 से 30 मिनट तक)

विशारद प्रथम वर्ष :
कुल मौखिक-२५०
समय: क्रियात्मक ५० मिनट व मंचप्रदर्शन २० से ३० मिनट प्रति छात्र

विशेषताओं सहित गजझंपा/छोटीसवारी/ रासताल / धमार ताल में						
तीनताल, झपताल	वंदना	ठाठ	आमद	तोडे	परन	कवित्त
२०	१०	१०	१०	१०	१०	१०

गतनिकास	गतभाव	ठुमरी	तराना या त्रिवट	नायिका भाव	तीनताल या झपताल लडी / चलन
२०	२०	१०	१०	१०	१०

ठेके की ठाठ दुगून	पढन्त	भजन या संत कवि के कवितापर भाव	उपज
१०	१०	१०	१०

मंच प्रदर्शन : ५०

ताल, लय	अभिनय	वेशभूषा	रंगमंच प्रस्तुती पद्धत
१५	१५	१०	१०

कुल अंक २५०

विशारद द्वितीय
कथ्थक नृत्य

पूर्णांक 400, न्यूनतम 180
शास्त्र 150, न्यूनतम 52
क्रियात्मक : 250 (क्रिया 200 + मंच प्रदर्शन 50) न्यूनतम 128

शास्त्र

प्रथम प्रश्न पत्र

अंक 75, न्यूनतम 26

१. प्राचीन नृत्यसम्बन्धी घटनाओं की जानकारी ।
२. मध्य युगीन ग्रंथों की जानकारी ।
३. नव रसों का पूर्ण ज्ञान ।
४. नायिका भेद का विस्तृत ज्ञान ।
   अ. धर्म भेद से नायिका, स्वकीया, परकीया, सामान्या ।
   आ. आयु विचार से नायिका, मुग्धा, मध्या, प्रौढा ।
   इ. प्रकृतिअनुसार नायिका, उत्तमा, मध्यमा, अधमा ।
   ई. जाति भेद से नायिका, पद्मिनी, चित्रणी, शंखिनी और हस्तिनी ।
   उ. परिस्थिति अनुसार अष्ट नायिकाओंमें से, कलहान्तरिता, वासकसज्जा, विरहोत्कंठिता, स्वाधीनपतिका ।
५. ओडिसी, कुचिपुड़ी, तथा मोहिनी अट्टम नृत्य की व्याख्या तथा वाद्यों व वस्त्रों की जानकारी ।
६. लय और ताल का उद्गम तथा कथ्थक नृत्य में महत्त्व ।
७. नाट्यशास्त्र तथा अभिनय दर्पण के अनुसार संयुक्त और असंयुक्त मुद्राओं का तौलनिक अभ्यास ।
८. छोटी सवारी (15) शिखर (17) में आमद, तिहाई, तोड़ा, परन आदि को लिपिबध्द करना ।
९. रामायण, महाभारत, भागवत पुराण तथा गीतगोविंद की संक्षेप में जानकारी ।

द्वितीय प्रश्नपत्र

अंक: 75, न्यूनतम :26

१. निम्नलिखित पात्रों की मुद्राएँ (अभिनय दर्पणानुसार) ब्रम्हा, विष्णु, सरस्वती, पार्वती, लक्ष्मी इन्द्र, अग्नि, यम, वरुण, वायु तथा दशावतार सम्बन्धी (मत्स्य, कूर्म, वराह, नृसिंह, वामन, परशुराम, राम, बलराम, कृष्ण, कल्कि)
२. पौराणिक साहित्य में नृत्य के संदर्भ ।
३. जीवनियाँ गुरु सुंदरप्रसाद, गुरु मोहनराव कल्याणपूरकर, महाराज कृष्णकुमार, पं. बिरजू महाराज
४. नृत्य में लोकधर्मी तथा नाट्यधर्मी की परिभाषा तथा प्रयोग ।
५. विदेशों में भारतीय नृत्यकला की लोकप्रियता ।
६. आधुनिक काल के नृत्य में विकसित होनेवाले नये तकनीक तथा उनका स्वरुप (ध्वनि संयोजन, प्रकाश सज्जा, नेपथ्य, सायक्लोरामा, स्लाईडस् आदि)
७. कथ्थक नृत्य में कवित्त तथा ठुमरी का स्थान ।
८. गायन, वादन, चित्रकला, मूर्तिकला तथा साहित्य का नृत्य से सम्बन्ध ।
९. मत्त ताल (18) रास ताल(13) में आमद तोड़ा, परन, चक्करदार तोडा, फरमाईशी परन, परमेलु, आदि।

क्रियात्मक :

१. विष्णुवंदना (राग, ताल तथा शब्दों की जानकारी)
२. छोटी सवारी (15), शिखर (17), मत्त ताल (18), रासताल (13) में विशेष तैय्यारी ।
३. तीनताल, झपताल, रूपक, सादे ठेके पर नाचना ।
४. छोटी छोटी कथाओं पर नृत्य निर्मिति करना। -
५. तत्कार में बाँट, लड़ी, चलन का विस्तार आदि का प्रदर्शन।
६. गतभाव में दक्षता, कांचन मृग (सीताहरण तक) कंसवध। (कथा कहकर अभिनय अनिवार्य)
७. बैठकर ठुमरी या पद की पंक्ति पर अनेकों प्रकार से संचारी भाव का विस्तार करना।
८. सभी तालों की रचनाओं को ताल देकर पढ़ना।
९. त्रिवट, तराना, चतुरंग, अष्टपदी, स्तुति आदि में से किन्ही दो का प्रदर्शन (राग, ताल, शब्द परिचय)
१०. नवरसों को बैठ कर केवल चेहरे द्वारा व्यक्त करने की क्षमता।
११. दशावतारों सम्बन्धी किसी रचना पर प्रदर्शन (रचनाकार, राग, ताल आदि का ज्ञान)
१२. तीनताल में लय के साथ धुकुटी, ग्रीवा आदि का संचालन।
१३. तीनताल का नगमा (लहरा) बजाने या गाने की क्षमता।
१४. परीक्षक द्वारा दिये गये प्रसंग को तुरन्त प्रस्तुत करना।
१५. अष्ट नायिकाओं पर भाव प्रस्तुति ।

- **मंचप्रदर्शन:** स्वतंत्ररूप में विधिवत मंचप्रदर्शन अनिवार्य (20 से 30 मिनट तक)

विशारद पूर्ण (द्वितीय वर्ष) :- कुल मौखिक २५०
समय :- क्रियात्मक ६० मिनिट + मंचप्रदर्शन २० से ३० मिनिट प्रति छात्र

छोटी सवारी / शिखर / मत्तताल/रासताल विशेषताओं सहित	तीनताल, झपताल, रूपक सादे ठेके पर नाचना	वंदना	
२०	२०	१०	
ततकार में बाँट / लडी / चलन	पढन्त तय्यारी के साथ	गतभाव	गतनिकास
१०	१०	२०	२०
बैठकर ठुमरी पदमर भाव	चतुरंग/अष्टपदी स्तुति	नवरस चेहरे द्वारा	नायिका पर भाव प्रस्तुति
२०	२०	१०	१०
दशावतार	लय के साथ भृकुटी / ग्रीवा संचालन	उपज	नगमा
१०	५	१०	१०

कुलअंक

२५०

मंच प्रदर्शन :- ५०

ताल/लय	अभिनय	वेशनुषा	रंगमंच प्रस्तुति पद्धत
१५	१५	१०	१०

अलंकार प्रथम
कथ्थक नृत्य

पूर्णांक : 500, न्यूनतम : 225,
शास्त्र 200, न्यूनतम : 70
क्रियात्मक 300 (क्रिया 200 + मंच प्रदर्शन 100)
न्यूनतम : 155

शास्त्र :

प्रथम प्रश्न-पत्र
अंक-100 न्यूनतम : 35

१. वैदिक साहित्य में नृत्य के संदर्भ
२. पुरातत्त्व में नृत्य के संदर्भ
३. नाट्यशास्त्र में कथ्थक नृत्य से संबंधित भ्रमरी तथा चारीओं क प्रयोग।
४. किसी भी एक कथ्थक कलाकार की नृत्य प्रस्तुति की समीक्षा (समालोचना)
५. नाट्यशास्त्र और अभिनय दर्पण के अनुसार दृष्टि भेद ।
६. नृत्य शब्द की मूल धातु उत्पत्ति और विकास।
७. कथ्थक नृत्य प्रस्तुति पर आधुनिक तकनीक का प्रभाव।
८. जाति का विस्तृत ज्ञान तील ताल में स्पष्ट कीजिये ।
९. झपताल के ठेके को ½ , ¾ ,1-1/4, 1-1/2 लयमें लिपिबध्द करना।

द्वितीय प्रश्नपत्र
अंक- 100 न्यूनतम : 35

१. कथ्थक नृत्य शैली के सौंदर्य शास्त्रीय सिध्दांत :
   (अ) लय ताल, (ब) लालित्य
   (क) सौष्ठव का भाव (ड) आवृतिबंध आदि
२. कथ्थक प्रदर्शन में वस्तुक्रम की विशेषता तथा त्रुटियाँ।

३. नृत्य में तत, सुषिर, अवनध्द तथा घन वाद्यों की उपयोगिता तथा जानकारी।
४. नौटंकी, तमाशा, नृत्यनाटिका, बैले तथा रास मण्डली की जानकारी।
५. क) रास ताल (13 मात्रा), लक्ष्मी ताल (18 मात्रा), वसंत ताल (9 मात्रा) तथा अष्टमंगल (22मात्रा) में ठेके की दुगुन, चौगुन
   (ख) उपरोक्त (क) सभी तालों में ठाठ, आमद, तिहाई, तोड़े, परन चक्करदार परन व कवित्त आदि को लिपिबध्द करना।
६. कथ्थक नृत्यशैली के प्रस्तुतिकरण के अंतर्गत सांगीतिक विचार ।
७. कथ्थक नृत्य मे संगति कलाकारों की भूमिका, आवश्यकता महत्त्व।

क्रियात्मक :

१. कृष्ण वन्दना, शिववन्दना या गणेशवन्दना किसी एक पर नृत्य अभिनय ।उपरोक्त रचना तालबध्द या आलाप में होनी चाहिए।

२. अपनी पसंद के ताल के अतिरिक्त रास, अष्टमंगल, बसंत या लक्ष्मी आदि में विशेष प्रदर्शन।

३. नयी परनों का तुरंत निर्माण करने की क्षमता ।

अ) नायक भेदों के गतभाव या पद पर तथा नायिका भेदों के पद अथवा ठुमरी पर भाव प्रस्तुत करना।

ब) एक पंक्तिपर अनेक संचारी भाव बताना ।

5) किसी एक रस पर आधारित रचना प्रस्तुत करना ।

6) आधुनिक कथा पर गतभाव प्रस्तुत करना या नृत्य नाटिका का रूप देना ।

7) एक अष्टपदी तथा एक तराना प्रस्तुत करना।

8) ततकार में चलन, लडी तथा लयकारी का विस्तार।

9) भिन्न-भिन्न जाति पर आधारित तिहाइयाँ जो तीन ताल के अतिरिक्त किसी अन्य ताल में हो।

10) दमदार पढन्त का प्रदर्शन ।

11) परीक्षक द्वारा दिये गये मुखडे पर तुरंत तिहाई बनाना ।

12) अभिनय द्वारा प्रस्तुत रचना के शब्दार्थ तथा भावार्थ का विवेचन ।

मंचप्रदर्शन: स्वतंत्ररूप में विधिवत मंचप्रदर्शन अनिवार्य (30 मिनटतक)

अलंकार प्रथम वर्ष : कुल मौखिक ३००

समय: क्रियात्मक ९० मिनट + मंच प्रदर्शन ३० मिनट प्रति छात्र

मंच प्रदर्शन   ठाठ   पढन्त   नृत   तत्कार

बंदिश ताल   ताल तरिका   अंग सफाई   तैय्यारी/लयकारी

१००   १० + १०   १० + १०   १० + १०

२०   २०   २०   २०

भावअंग   शास्त्रज्ञान   तालज्ञान

गतभाव / ठुमरी /भजन   भिन्न जातिपर आधारित तिहाईयाँ   **कुल अंक**

१५   १०   १०   १०   १०   **३००**

विशेषज्ञान   पात्रता

शैलीविशेष / अपनीशैली-अन्यशैली तुलनात्मक   तराणा / अष्टपदी उपज कुल प्रभाव

१०   १०   १५   १५   १५

अलंकार द्वितीय वर्ष
कथ्थक नृत्य

पूर्णांक : 500, न्यूनतम : 225,
शास्त्र : 200, न्यूनतम : 70
क्रियात्मक : 300 (क्रिया 200 + मंच प्रदर्शन: 100) न्यूनतम : 155

शास्त्र
प्रथम प्रश्नपत्र
अंक- 100 न्यूनतम : 35

१. मंदिरों में नृत्य की प्राचीन परम्परा का इतिहास ।
२. नट, नर्तक, तौर्यत्रिकम् शब्दों की परिभाषा ।
३. कथ्थक नृत्य प्रस्तुति में संरचनाओं के नये प्रयोग और प्रवाह ।
४. आधुनिक रंग प्रस्तुति का तकनीकी ज्ञान जैसे कि रचना आलेख- संगीत संयोजन नृत्य निर्देशन - वेशभूषा रंगभूषा नेपथ्य तथा प्रकाश सज्जा आदि ।
५. नाट्यशास्त्रानुसार निम्नलिखित की व्याख्या :-
   1) दर्शनविधि 8 2) भृकुटि भेद 7
   3) अधर भेद 6 4) गरदन के प्रकार 9
   5) हस्तमुद्रा के प्रकार 64 6) वक्षस्थल के प्रकार 5
   7) कमर के प्रकार 5 8) पाव के कार्य 5

6) नाट्य शास्त्र का उद्गम
7) भाव तथा रस का संबंध, भाव, विभाव, अनुभाव तथा सात्त्विक भाव का नृत्य में प्रयोग ।
8) संत सूरदास की किन्हीं दो काव्य रचनाओं के आधार पर नृत्य के संदर्भ का विवेचन ।
9) किसी भी एक ताल में आमद, कमाली चक्करदार परन, फरमाईशी परन, तिहाई (जो 2 आवृत्ति से कम न हों) तिस्त्र जाति व मिस्त्र जाति परन या चक्कदार परन, तथा कवित्त आदि की लिपिबध्द क्रिया ।

द्वितीय प्रश्न पत्र

अंक - 100 न्यूनतम : 35

१. कथक नृत्य के मुख्य तीन घरानों (लखनऊ, जयपुर, बनारस) की परम्पराओं की समालोचना।
२. निम्नलिखित लयकारियों को तीनताल, झपताल, रूपक, धमार, रास तथा शिखर में लिखना।
   3/4, 1-1/2, 1-3/4, 4/5, 5/4 आदि।
३. निम्नलिखित की विस्तारपूर्वक परिभाषा। स्तुति, आमद, सलामी, स्त्री ठाठ, पुरुष ठाठ, करण, चाल, कसक - मसक, हाव-भाव, तत्कार में रेला, पल्टा, बांट, लड़ी चलन, प्रमलू, फरमाइशी चक्करदार, ठुमरी, त्रिवट, चतुरंग, अष्टपदी।
४. ठुमरी शब्द का स्वरूप, उत्पत्ति तथा विकास।
५. निम्नलिखित में से किसी एक पर निबन्ध :

- सा : लय, ताल और लयकारी की कथ्थक नृत्य में विशेषता ।
- रे : कथ्थक नृत्य की वेशभूषा के विभिन्न रूप ।
- ग : कृष्ण चरित्र का कथ्थक शैली पर प्रभाव।
- म : कथ्थक नृत्य पर मुस्लिम सभ्यता का प्रभाव।

- प : कथ्थक नृत्य में घुंघरू का महत्व।
- ध : कथ्थक नृत्य में पदंत की विशेषता ।

६. निम्नलिखित तालों में आमद, तिहाई (2 आवृत्ति) तोड़े, परन, चकरदार परन, फरमाईशी परन, कवित्त, आदि।
   गणेश ताल (21 मात्रा), रुद्रताल (11 मात्रा), अर्जुनताल (24)
७. नाट्यशास्त्र के व्याख्याकारों का विवेचन।
८. 'करण' क्या है ? 108 करणों में से पहले 10 करणों के नाम ।

क्रियात्मक :

१. गणेश स्तुति, दुर्गास्तुति तथा रामस्तुति ।
२. अपनी पसंद की ताल के अतिरिक्त गणेश, रुद्र, अर्जुन या अष्टमंगल में से किसी एक ताल में विशेष प्रदर्शन ।
३. ध्रुपद या अष्टपदी मे से किसी एक पर भाव नृत्य ।
४. गतभाव में दक्षता द्रौपदी चीर हरण, रामायण से जटायु मोक्ष या किसी अन्य प्रसिध्द प्रसंग पर परीक्षकों की अनुमति से गतभाव प्रस्तुत करना।
५. किसी प्रसिध्द ठुमरी के अतिरिक्त परीक्षक द्वारा गाई जाने वाली ठुमरी का भी भाव दर्शन ।
६. रसों पर आधारित गतभाव या पद पर भाव।
७. नायिका भेद पर विशेष अधिकार।
८. अपनी कोई रचना ।
९. सभी तालों में पढ़न्त ताल सहित ।
१०. स्वयं गा कर कोई रचना प्रस्तुत करना तथा तबले में बोलो को बजाना ।
११. छोटे बच्चों को सिखाने की क्षमता।

- **मंचप्रदर्शन :** स्वतंत्ररूप में विधिवत् मंचप्रदर्शन अनिवार्य (30 मिनट तक)

अलंकार द्वितीय वर्ष : कुल मौखिक - ३००
समय: ९० मिनिट + मंचप्रदर्शन ३० मिनिट प्रति छात्र

रास / अष्टमंगल / बसंत / लक्ष्मी

ताल में विशेष प्रदर्शन

मंच प्रदर्शन	ठाठ	पढन्त	नृत	तत्कार
	बंदिश अंदाज	ताल तरिका	अंग सफाई	तैयारी / लयकारी
१००	१० + १०	१० + १०	१० + १०	
	२०	२०	२०	२०

भाव अंग | उपज

गतभाव	नायक	नायिका	धृपद अष्टपदी	नवरास	ठुमरी भाव	अपनी रचना
१०	१०	१०	१५	१०	१०	१०

विशेष ज्ञान | कुल प्रभाव

तबला बजाना	सिखाने की क्षमता	कुल प्रभाव
१०	२०	१५

कुल अंक ३००